

يَعِزُّدِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ										
उन की तरफ		तुम लौट कर जाओगे		जब	तुम्हारे पास		उज़र लाएंगे			
قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ تُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ										
तुम्हारी सब ख़बरें (हालात)		अल्लाह	हमें बता चुका है		तुम्हारा	हरगिज़ हम यकीन न करेंगे		उज़र न करो		आप (स) कह दें
وَسِيرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ										
पोशीदा	जानने वाले	तरफ	तुम लौटाए जाओगे	फिर	और उस का रसूल		तुम्हारे अमल	अल्लाह	और अभी देखेगा	
وَالشَّهَادَةِ فَيَنْبِئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ										
अल्लाह की	अब कस्में खाएंगे	94	तुम करते थे		वह जो	फिर वह तुम्हें जता देगा		और ज़ाहिर		
لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ										
उन से	सो तुम मुँह मोड़ लो	उन से	ताकि तुम दरगुज़र करो		उन की तरफ	वापस जाओगे तुम		जब	तुम्हारे आगे	
إِنَّهُمْ رَجَسٌ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾										
95	वह कमाते	थे	उस का जो	बदला	जहन्नम	और उन का ठिकाना		पलीद	वेशक वह	
يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ										
तो वेशक अल्लाह	उन से	तुम राज़ी हो जाओ	सो अगर	उन से	ताकि तुम राज़ी हो जाओ		तुम्हारे आगे	वह कस्में खाते हैं		
لَا يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا										
कुफ़्र में	बहुत सख़्त	देहाती	96	नाफरमान		लोग	से	राज़ी नहीं होता		
وَنِفَاقًا وَاجْدُرُ إِلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى										
पर	अल्लाह	नाज़िल किए	जो	एहकाम		कि वह न जानें		और ज़ियादा लाइक़	और निफाक़ में	
رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ										
लेते हैं (समझते हैं)		जो	देहाती	और से (बाज़)	97	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अपना रसूल (स)	
مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمْ الدَّوَائِرُ عَلَيْهِمْ										
उन पर		गर्दिशें	तुम्हारे लिए	और इन्तिज़ार करते हैं		तावान		जो वह खर्च करते हैं		
دَائِرَةِ السَّوِّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ										
जो	देहाती	और से (बाज़)	98	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	बुरी	गर्दिश		
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبَتٍ										
नज़्दीकियां		जो वह खर्च करें		और समझते हैं		और आख़िरत का दिन		अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	
عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوْتُ الرَّسُولَ إِلَّا أَنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ										
उन के लिए	नज़्दीकी	यकीनन वह		हां हां	रसूल	और दुआएं		अल्लाह से		
سَيَدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩٩﴾										
99	निहायत मेहरबान	बख़शने वाला	वेशक अल्लाह		अपनी रहमत	में	अल्लाह	जल्द दाख़िल करेगा उन्हें		

जब तुम उन की तरफ़ लौट कर जाओगे तो वह तुम्हारे पास उज़र लाएंगे। कह दो कि उज़र न करो, हम हरगिज़ यकीन न करेंगे तुम्हारा, अल्लाह हमें तुम्हारी सब ख़बरें बता चुका है, और अभी अल्लाह तुम्हारे अमल देखेगा और उस का रसूल (स), फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर वह तुम्हें जता देगा तुम जो करते थे। (94)

जब तुम उन की तरफ़ वापस जाओगे तब तुम्हारे आगे अल्लाह की कस्में खाएंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो तुम उन से मुँह मोड़ लो, वेशक वह पलीद हैं, और उन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (95)

वह तुम्हारे आगे कस्में खाते हैं ताकि तुम उन से राज़ी हो जाओ, सो अगर तुम उन से राज़ी (भी) हो जाओ तो वेशक अल्लाह राज़ी नहीं होता नाफ़रमान लोगों से। (96)

देहाती कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं, और ज़ियादा इमकानात हैं कि वह न जानें जो एहकाम अललाह ने अपने रसूल (स) पर नाज़िल किए, और अललाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (97)

और बाज़ देहाती हैं जो (अल्लाह की राह में) जो खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे लिए गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं, उन्हीं पर है बुरी गर्दिश, और अललाह सुनने वाला जानने वाला है। (98)

और बाज़ देहाती हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो वह खर्च करते हैं उसे अल्लाह से नज़्दीकियों और रसूल (स) की दुआएं (लेने का ज़रीआ) समझते हैं, हां हां! यकीनन वह नज़्दीकी का (ज़रीआ) है उन के लिए, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, वेशक अल्लाह बख़शने वाला निहायत मेहरबान है। (99)

और सब से पहले (ईमान और इस्लाम में) सबक़त करने वाले मुहाजरीन और अनुसार में से, और जिन्होंने ने नेकी के साथ पैरवी की, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह उस से राज़ी हुए, और उस ने उन के लिए बागात तैयार किए हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (100)

और जो देहाती तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से बाज़ मुनाफ़िक़ है, और मदीने वालों में से बाज़ निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं और हम जल्द उन्हें दो बार अज़ाब देंगे, फिर वह अज़ाबे अज़ीम की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (101)

और कुछ और हैं जिन्होंने ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया, उन्होंने ने एक अच्छा और दूसरा बुरा अमल मिला लिया, करीब है कि अल्लाह उन्हें माफ़ करदे, बेशक़ अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (102)

आप (स) उन के मालों में से ज़कात ले लें, आप (स) उन्हें पाक और साफ़ कर दें उस से, और उन पर दुआए (ख़ैर) करें, बेशक़ आप(स) की दुआ उन के लिए (वाइसे) सुकून है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (103)

क्या उन्हें इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है, और कुबूल करता है सदकात और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (104)

और आप (स) कहें तुम अमल किए जाओ, पस अब देखेगा अल्लाह और उस का रसूल (स) और मोमिन तुम्हारे अमल, और तुम जल्द पोशीदा और ज़ाहिर जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (105)

और कुछ और हैं वह अल्लाह के हुक्म पर मौकूफ़ रखे गए हैं, ख़्वाह वह उन्हें अज़ाब दे और ख़्वाह उन की तौबा कुबूल कर ले, और अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है। (106)

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهِجَرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ																			
और जिन लोगों		और अनुसार		मुहाजरीन		से		सब से पहले		और सबक़त करने वाले									
اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ																			
उन के लिए		और तैयार किया उस ने		उस से		और वह राज़ी हुए		राज़ी हुआ अल्लाह उन से		नेकी के साथ		उस की पैरवी की							
جَنَّتِ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ																			
यह		हमेशा		उन में		हमेशा रहेंगे		नहरें		उन के नीचे		बहती है		बागात					
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ وَمِمَّنْ																			
और से (बाज़)		मुनाफ़िक़ (जमा)		देहाती		से बाज़		तुम्हारे इर्द गिर्द		और उन में जो		100		कामयाबी बड़ी					
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُّوا عَلَى النَّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ																			
हम		तुम नहीं जानते उन को		निफ़ाक़		पर		अड़े हुए है		मदीने वाले									
نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾																			
101		अज़ीम		अज़ाब		तरफ़		वह लौटाए जाएंगे		फिर		दो बार		जल्द हम उन्हें अज़ाब देंगे		जानते हैं उन्हें			
وَاخْرُؤْنَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا																			
बुरा		और दूसरा		एक अमल अच्छा		उन्होंने ने मिलाया		अपने गुनाहों का		उन्होंने ने एतराफ़ किया		और कुछ और							
عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ																			
लेलें आप (स)		102		निहायत मेहरबान		बख़्शने वाला		बेशक अल्लाह		माफ़ कर दे उन्हें		कि		अल्लाह		करीब है			
مِّنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلَّ عَلَيْهِمْ																			
उन पर		और दुआ करो		उस से		और साफ़ कर दो		तुम पाक कर दो		ज़कात		उनके माल (जमा)		से					
إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ																			
कि		क्या उन्हें इल्म नहीं		103		जानने वाला		सुनने वाला		और अल्लाह		उन के लिए		सुकून		आप (स) की दुआ		बेशक	
اللَّهُ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ																			
सदकात		और कुबूल करता है		अपने बन्दे		से - की		तौबा		कुबूल करता है		वह		अल्लाह					
وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمٌ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ																			
अल्लाह		पस अब देखेगा		तुम किए जाओ अमल		और कह दें आप (स)		104		निहायत मेहरबान		तौबा कुबूल करने वाला		वह		और यह कि अल्लाह			
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَيُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ																			
जानने वाला पोशीदा		तरफ़		और जल्द लैटाए जाओग		और मोमिन (जमा)		और उसका रसूल (स)		तुम्हारे अमल									
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ وَآخِرُونَ مُرْجُونَ																			
मौकूफ़ रखे गए		और कुछ और		105		तुम करते थे		वह जो		सो वह तुम्हें जता देगा		और ज़ाहिर							
لَا مَرَّ لِلَّهِ إِلَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِنَّمَا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾																			
106		हिक्मत वाला		जानने वाला		और अल्लाह		तौबा कुबूल कर ले उन की		और ख़्वाह		वह उन्हें अज़ाब दे		ख़्वाह		अल्लाह के हुक्म पर			

عند التّائيبين  
وقيل منزل

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ						
और वह लोग जो	उन्होंने ने बनाई	मस्जिद	नुक्सान पहुँचाने को	और कुफ़ के लिए	और फूट डालने को	दरमियान
الْمُؤْمِنِينَ وَإِزْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ						
मोमिनों (जमा)	और घात की जगह बनाने के लिए	उस के वासते जो	उस ने जंग की	अल्लाह	और उस का रसूल (स)	से पहले
وَلِيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ						
और वह अलबत्ता कस्में खाएंगे	नहीं	हम ने चाहा	मगर (सिर्फ)	भलाई	और अल्लाह	वह यकीनन
لَكَذِبُونَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ						
झूटे हैं	107	आप (स) न खड़े होना	उस में	कभी	वेशक वह मस्जिद	बुन्याद रखी गई
مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ						
से पहले दिन	ज़ियादा लाइक	कि	आप (स) खड़े हों उस में	उस में	ऐसे लोग	वह चाहते हैं कि
يَتَّطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٨﴾ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ						
वह पाक रहें	और अल्लाह	महबूब रखता है	पाक रहने वाले	108	सो क्या वह जो	बुन्याद रखी
عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ						
पर तक्वा (खौफ)	अल्लाह से	और खुशनूदी	वेहतर	या	जो - जिस	बुन्याद रखी
عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ						
पर किनारा	खाई	गिरने वाला	गिर पड़ी	सो गिर	उस को लेकर	में और अल्लाह
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٩﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا						
हिदायत नहीं देता	लोग	ज़ालिम (जमा)	109	हमेशा रहेगी	उन की इमारत	जो कि बुन्याद रखी
رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾						
शक	में	उन के दिल	मगर	यह कि टुकड़े हो जाएं	उन के दिल	हिकमत वाला
إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ						
वेशक अल्लाह	खरीद लिए	से	मोमिन (जमा)	उन की जानें	और उन के माल	
بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ						
उस के बदले	उन के लिए	जन्नत	वह लड़ते हैं	में	अल्लाह की राह	सो वह मारते हैं
وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ						
और मारे जाते हैं	वादा	उस पर	सच्चा	तौरात में	और इंजील	
وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا						
और कुरआन	और कौन	ज़ियादा पूरा करने वाला	अपना वादा	अल्लाह से	पस खुशियां मनाओ	
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾						
सो अपने सौदे पर	जो कि	तुम ने सौदा किया	उस से	और यह	वह	कामयाबी

और वह लोग जिन्होंने ने मस्जिद ज़रार (नुक्सान पहुँचाने के लिए) बनाई और कुफ़ करने के लिए, और मोमिनों के दरमियान फूट डालने के लिए और उस के वासते घात की जगह बनाने के लिए जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से जंग की उस से पहले, और वह अलबत्ता कस्में खाएंगे कि हम ने सिर्फ भलाई चाही, और अल्लाह गवाही देता है वह यकीनन झूटे हैं। (107)

आप (स) उस में कभी न खड़े होना, वेशक वह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से तक्वे पर रखी गई है ज़ियादा लाइक है कि आप (स) उस में खड़े हों, उस में ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि वह पाक रहें, और अल्लाह महबूब रखता है पाक रहने वालों को। (108)

सो क्या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद अल्लाह के खौफ और (उस की) खुशनूदी पर रखी, वह वेहतर है? या वह जिस ने अपनी इमारत की बुन्याद गिरने वाली खाई (गढ़े) के किनारे पर रखी? सो वह उसको लेकर दोज़ख की आग में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (109)

वह इमारत जिस की उन्होंने ने बुन्याद रखी है हमेशा शक डालती रहेगी उन के दिलों में, मगर यह कि उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं, और अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है। (110)

वेशक अल्लाह ने खरीद ली मोमिनों से उन की जानें और उन के माल, उस के बदले कि उन के लिए जन्नत है, वह लड़ते हैं अल्लाह की राह में, सो वह मारते हैं और मारे (भी) जाते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात में, और इंजील और कुरआन में, और अल्लाह से ज़ियादा कौन अपना वादा पूरा करने वाला है? पस अपने उस सौदे पर खुशियां मनाओ जो तुम ने उस से सौदा किया है, और यह अज़ीम कामयाबी है। (111)

तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द ओ सना करने वाले, (अल्लाह की राहे में) सफ़र करने वाले, रुकूअ करने वाले, सिज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की (काइम करदा) हुदूद की हिफाज़त करने वाले, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (112) नबी (स) के लिए और मोमिनों के लिए (शायों) नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख़्शिश चाहें, अगरचे वह उन के करावतदार हों, उस के बाद जब कि उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (113) और इब्राहीम (अ) का अपने बाप के लिए बख़्शिश चाहना न था मगर एक वादे के सबब जो वह उस बाप से कर चुके थे, फिर जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उस से बेज़ार हो गए, वेशक इब्राहीम (अ) नर्म दिल बुर्दवार थे। (114) और अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी को उस के बाद गुमराह करे, जबकि उस ने उन्हें हिदायत दे दी जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे जिस से वह परहेज़ करें, वेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (115) वेशक अल्लाह ही के लिए है वादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, वह ज़िन्दगी देता है और (वही) मारता है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हीमायती है और न मददगार। (116) अलबत्ता तबज्जुह फ़रमाई अल्लाह ने नबी (स) पर, और मुहाजरीन ओ अनुसार पर, वह जिन्होंने तंगी की घड़ी में उस की पैरवी की, उस के बाद जबकि करीब था कि उन में से एक फ़रीक़ के दिल फिर जाएं, फिर वह उन पर मुतवज्जुह हुआ, वेशक वह उन पर इन्तिहाई शफ़ीक़, निहायत मेहरवान है। (117)

التَّائِبُونَ الْعَبَدُونَ الْحَمِيدُونَ السَّائِحُونَ الزَّكِيُّونَ					
रुकूअ करने वाले	सफ़र करने वाले	हम्द ओ सना करने वाले	इबादत करने वाले	तौबा करने वाले	
السَّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ					
सिज्दा करने वाले	हुक्म देने वाले	नेकी का	और रोकने वाले	से	बुराई
وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝۱۱۲ مَا كَانَ					
और हिफाज़त करने वाले	अल्लाह की हुदूद की	और खुशख़बरी दो	मोमिन (जमा)	112	नहीं है
لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ					
नबी के लिए	और जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	कि	वह बख़्शिश चाहें	मुश्रिकों के लिए	
وَلَوْ كَانُوا أَوْلَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنََّّهُمْ					
ख़्वाह	वह हों	करावतदार	उस के बाद	जब ज़ाहिर हो गया	उन पर कि वह
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝۱۱۳ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ					
दोज़ख़ वाले	113	और न था	बख़्शिश चाहना	इब्राहीम (अ)	अपने बाप के लिए
إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ					
मगर	एक वादे के सबब	जो उस ने वादा किया	उस से	फिर जब	ज़ाहिर हो गया उस पर कि वह
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝۱۱۴ وَمَا كَانَ اللَّهُ					
अल्लाह का दुश्मन	वह बेज़ार हो गया	उस से	वेशक	इब्राहीम (अ)	नर्म दिल बुर्दवार
114	और नहीं है	अल्लाह			
لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ					
कि वह गुमराह करे	कोई कौम	बाद	जब उन्हें हिदायत दे दी	जब तक	वाज़ेह करदे उन पर
مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝۱۱۵ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ					
जिस	वह परहेज़ करें	वेशक अल्लाह	हर शै का	जानने वाला	115
		वेशक अल्लाह	उस के लिए	वादशाहत	
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُمْ					
आस्मानों	और ज़मीन	वही ज़िन्दगी देता है	और वह मारता है	और तुम्हारे लिए नहीं	
مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيِّ وَلَا نَصِيرٌ ۝۱۱۶ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَىٰ					
कोई	अल्लाह के सिवा	से	कोई हीमायती	और न मददगार	116
			अलबत्ता तबज्जुह फ़रमाई	अल्लाह	पर
النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي					
नबी (स)	और मुहाजरीन	और अनुसार	वह जिन्होंने ने	उस की पैरवी की	में
سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبَ فَرِيقٍ					
घड़ी	तंगी	उस के बाद	जब करीब था	फिर जाएं	दिल (जमा) एक फ़रीक़
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝۱۱۷					
उन से	फिर वह मुतवज्जुह हुआ	उन पर	वेशक वह	उन पर	117
			इन्तिहाई शफ़ीक़	निहायत मेहरवान	



وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ							
और पर	वह तीन	वह जो	पीछे रखा गया	यहां तक कि	जब	तंग होगई	उन पर
الْأَرْضِ بِمَا رَحِبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمُ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ							
ज़मीन	बावजूद कुशादगी	और वह तंग हो गई	उन पर	उन की जानें	और उन्होंने ने जान लिया	कि	
لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا							
नहीं पनाह	से	अल्लाह	मगर	उस की तरफ़	फिर	वह मुतवज़्ज़ुह हुआ उन पर	ताकि वह तौबा करें
إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ							
बेशक अल्लाह	वह	तौबा कुबूल करने वाला	निहायत मेहरबान	118	ऐ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	डरो अल्लाह से
وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿١١٩﴾ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ							
और हो जाओ	साथ	सच्चे लोग	119	न था	मदीने वालों को	और जो	
حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ							
उन के इर्द गिर्द	देहातियों में से	कि वह पीछे रहजाते	से	अल्लाह के रसूल (स)			
وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ							
और यह कि ज़ियादा चाहें वह	अपनी जानों को	से	उन की जान	यह	इस लिए कि वह	नहीं पहुँचती उन को	
ظَمًا وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطْئُونَ							
कोई पयास	और न कोई मुशक्कत	और न	कोई भूख	में	अल्लाह की राह	और न वह कदम रखते हैं	
مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نِيْلًا إِلَّا							
ऐसा कदम	गुस्सा हों	काफिर (जमा)	और न वह छीनते हैं	से	दुश्मन	कोई चीज़	मगर
كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾							
लिखा जाता है उन के लिए	उस से	नेक अमल	बेशक अल्लाह	ज़ाया नहीं करता	अजर	नेकोकार (जमा)	120
وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ							
और न	वह खर्च करते हैं	खर्च	छोटा	और न बड़ा	और न तै करते हैं		
وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا							
कोई वादी (मैदान)	मगर	लिखा जाता है उन के लिए	ताकि जज़ा दे उन्हें	अल्लाह	बेहतरीन	जो	
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ							
वह करते थे (उन के आमाल)	121	और नहीं है	मोमिन (जमा)	कि वह कूच करें	सब के सब	पस क्यों न कूच करे	
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ							
से	हर गिरोह	उन से (उन की)	एक जमाअत	ताकि वह समझ हसिल करें	दीन में		
وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾							
और ताकि वह डर सुनाएं	अपनी कौम	जब	वह लौटें	उन की तरफ़	ताकि वह (अजब नहीं)	बचते रहें	122

और उन तीन पर (ज़िन का मामला) पीछे रखा गया था, यहां तक कि उन पर तंग होगई ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद, और उन पर उन की जानें तंग हो गईं (अपनी जानों से तंग आगए) और उन्होंने ने जान लिया कि अल्लाह से कोई पनाह नहीं मगर उसी कि तरफ़ है, फिर वह उन पर (अपनी रहमत से) मुतवज़्ज़ुह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (118)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ। (119)

(लाइक) न था मदीने वालों को (और उन्हें) जो उन के इर्द गिर्द देहाती हैं कि वह अल्लाह के रसूल (स) से पीछे रहजाएं, और यह कि वह ज़ियादा चाहें अपनी जानों को उन (स) की जान से, यह इस लिए कि उन को नहीं पहुँचती कोई प्यास, और न कोई मुशक्कत, और न कोई भूख, अल्लाह की राह में, और न वह ऐसा कदम रखते हों कि काफिर गुस्सा हों और न वह छीनते हैं दुश्मन से कोई चीज़, मगर उस से (उस के बदले) उन के लिए नेक अमल लिखा जाता है, बेशक अल्लाह अजर ज़ाया नहीं करता नेकोकारों का। (120)

और वह कोई छोटा या बड़ा (कम या ज़ियादा) खर्च नहीं करते और न वह तै करते हैं कोई मैदान, मगर उन के लिए लिख दिया जाता है, ताकि अल्लाह उन के आमाल की उन्हें बेहतरीन जज़ा दे। (121)

और (ऐसे तो) नहीं कि मोमिन सब के सब कूच करें। पस क्यों न उन के हर गिरोह में से एक जमाअत कूच करे ताकि वह समझ हसिल करें दीन में, और ताकि वह अपनी कौम को डर सुनाएं जब उन की तरफ़ लौटें, अजब नहीं कि वह बचते रहें। (122)

ऐ मोमिनो! अपने नज़दीक के काफ़िरों से लड़ो, और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर पाएँ सख्ती, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (123)

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन में से बाज़ कहते हैं उस ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा कर दिया है? सो जो लोग ईमान लाए हैं उस ने ज़ियादा कर दिया है उन का ईमान, और वह खुशियां मनाते हैं, (124)

और वह लोग जिन के दिलों में बीमारी है, उस ने ज़ियादा कर दी उन की गन्दगी पर गन्दगी, और वह मरने तक काफ़िर ही रहे। (125)

क्या वह नहीं देखते कि वह हर साल आज़माए जाते हैं? एक बार या दो बार, फिर न वह तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। (126)

और जब उतारी जाती है कोई सूरत तो उन में से एक दूसरे को देखने लगता है, क्या तुम्हें कोई (मुसलमान) देखता है? फिर वह फिर जाते हैं, अल्लाह ने उन के दिल फेर दिए, क्योंकि वह लोग समझ नहीं रखते। (127)

अलबत्ता तुम्हारे पास आया एक रसूल (स) तुम में से, जो तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे उस पर ग़रां है, तुम्हारी (भलाई) का बहुत ख़ाहिशमन्द है, मोमिनो पर शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है। (128)

फिर अगर वह मुँह मोड़ें तो आप (स) कह दें मुझे काफ़ी है अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, और वह अर्श अज़ीम का मालिक है। (129)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ					
नज़दीक तुम्हारे	वह जो	लड़ो	वह जो ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلِيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ					
कि अल्लाह	और जान लो	सख्ती	तुम्हारे अन्दर	और चाहिए कि वह पाएँ	कुपफ़ार से (काफ़िर)
مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ					
कहते हैं	बाज़	तो उन में से	कोई सूरत	नाज़िल की जाती	और जब
परहेज़गारों के साथ	123				
أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا					
वह लोग जो ईमान लाए	सो जो	ईमान	उस ने	ज़ियादा कर दिया (उस का)	तुम में से किस
فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾ وَأَمَّا					
और जो	124	खुशियां मनाते हैं	और वह	ईमान	उस ने ज़ियादा कर दिया उन का
الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ					
तरफ़ (पर)	गन्दगी	उस ने ज़ियादा कर दी उन की	बीमारी	उन के दिल (जमा)	में
वह लोग जो					
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَفِرُونَ ﴿١٢٥﴾ أَوَلَا يَرَوْنَ					
क्या नहीं वह देखते	125	काफ़िर (जमा)	और वह	और वह मरे	उन की गन्दगी
أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ					
फिर	दो बार	या	एक बार	हर साल में	आज़माए जाते हैं
कि वह					
لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ﴿١٢٦﴾ وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ					
कोई सूरत	और उतारी जाती है	और जब	126	नसीहत पकड़ते हैं	वह
और न	न वह तौबा करते हैं				
نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ					
फिर	कोई	देखता है तुम्हें	क्या	बाज़ (दूसरे)	को
उन में से (कोई एक)	देखता है				
انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ					
लोग	क्योंकि वह	उन के दिल	अल्लाह	फेर दिए	वह फिर जाते हैं
لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ					
गरां	तुम्हारी जानें (तुम)	से	एक रसूल (स)	अलबत्ता तुम्हारे पास आया	127
समझ नहीं रखते					
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ					
इन्तिहाई शफ़ीक़	मोमिनो पर	तुम पर	हरीस (बहुत ख़ाहिशमन्द)	तुम्हें तकलीफ़ पहुँचे	जो
उस पर					
رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ					
उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	अल्लाह	मुझे काफ़ी है	तो कह दें
फिर अगर वह मुँह मोड़ें	128				
निहायत मेहरबान					
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾					
129	अज़ीम	अर्श	मालिक	और वह	मैं ने भरोसा किया
उस पर					

11 رُكُوعَاتُهَا ﴿ (10) سُورَةُ يُونُس ﴿ آيَاتُهَا 109										
रुकुआत 11				(10) सूरह यूनस यूनस (अ)			आयात 109			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ										
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है										
الرَّ ۚ تِلْكَ آيَةُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿ ۱ ۝ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا										
हम ने	कि	तअज्जुब	लोगों को	क्या	1	हिक्मत	किताब	आयतें	यह	अलिफ़-लाम-रा
वहि भेजी				हुआ		वाली				
إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ										
उन के	कि	जो लोग ईमान लाए	और	लोग	वह डराए	कि	उन से	एक	तरफ-	
लिए		(ईमान वाले)	खुशखबरी दे					आदमी	पर	
قَدَمٌ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿ ۲ ۝										
2	खुला	जादूगर	यह	वेशक	काफिर	उन का	पास	सच्चा	पाया	
				(जमा)	बोले	रब				
إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ										
दिन	छे	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	वह जिस	अल्लाह	वेशक तुम्हारा रब		
	(6)					ने				
ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا										
मगर	सिफारिशी	कोई	नहीं	काम	तदबीर	अर्श पर	काइम	फिर		
					करता है		हुआ			
مِنْ بَعْدِ ۚ إِنَّهُ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ فَأَعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿ ۳ ۝ إِلَيْهِ										
उसी की	3	सो क्या तुम	पस उस की	तुम्हारा	अल्लाह	वह है	उस की	वाद		
तरफ़		ध्यान नहीं करते	बन्दगी करो	रब			इजाज़त			
مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ										
दोबारा	फिर	पहली बार पैदा	वेशक	सच्चा	अल्लाह	वादा	सब	तुम्हारा लौट		
पैदा करेगा		करता है	वही					कर जाना		
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا										
कुफ़	और वह	इन्साफ़ के	नेक (जमा)	और उन्होंने ने	ईमान	वह लोग	ताकि जज़ा			
किया	लोग जो	साथ		अमल किए	लाए	जो	दे			
لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿ ۴ ۝										
4	वह कुफ़	क्यों	दर्दनाक	और	खौलता	से	पीना है	उन के		
	करते थे	कि		अज़ाब	हुआ		(पानी)	लिए		
هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ										
मन्ज़िलें	और मुक़रर	नूर	और चाँद	जगमगाता	सूरज	बनाया	जिस ने	वह		
	कर दी उस की	(चमकता)								
لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ										
हक़ (दुरुस्त	मगर	यह	अल्लाह	नहीं पैदा	और	बरस	गिनती	ताकि तुम		
तदबीर) से				किया	हिसाब	(जमा)		जान लो		
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿ ۵ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ										
और दिन	रात	बदलना	में	वेशक	5	इल्म वालों के लिए	निशानियाँ	वह खोल कर		
								बयान करता है		
وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ﴿ ۶ ۝										
6	परहेज़गारों	निशानियाँ	और ज़मीन	आस्मानों में	अल्लाह ने	और				
	के लिए	हैं			पैदा किया	जो				

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरवान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह हिक्मत वाली किताब की आयतें हैं। (1) क्या लोगों को तअज़्जुब हुआ? कि हम ने वहि भेजी एक आदमी पर उन में से कि वह लोगों को डराए, और ईमान वालों को खुशख़बरी दे कि उन के लिए सच्चा पाया (मक़ाम) है उन के रब के पास। काफ़िर बोले वेशक यह तो खुला जादूगर है। (2) वेशक तुम्हारा रब अल्लाह है, जिस ने पैदा किया छे (6) दिनों में आस्मानों को और ज़मीन को, फिर वह अर्श पर काइम हुआ, काम की तदबीर करता है, कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद, वह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस उस की बन्दगी करो, सो क्या तुम ध्यान नहीं देते? (3) उस की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, वेशक वही पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि उन लोगों को इन्साफ़ के साथ जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और जिन लोगों ने कुफ़ किया उन के लिए खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अज़ाब है, क्योंकि वह कुफ़ करते थे। (4) वही है जिस ने सूरज को जगमगाता और चाँद को चमकता बनाया और उस की मन्ज़िलें मुक़रर कर दी ताकि तुम बरसों की गिनती जान लो और हिसाब, अल्लाह ने यह नहीं पैदा किया मगर दुरुस्त तदबीर से, वह इल्म वालों के लिए निशानियाँ खोल कर बयान करता है। (5) वेशक रात और दिन के बदलने में, और जो अल्लाह ने आस्मानों में और ज़मीन में पैदा किया (उस में) निशानियाँ हैं परहेज़गारों के लिए। (6)

वेशक जो लोग हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए और उस पर मुतमइन हो गए, और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफ़िल हैं, (7)

यही लोग हैं जिन का ठिकाना जहन्नम है, उस का बदला जो वह कमाते थे। (8)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, उन का रब उन्हें राह दिखाएगा उन के ईमान की बदौलत (ऐसे महलात की) जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बागात में। (9)

उस में उन की दुआ (हो गी) ऐ अल्लाह! तू पाक है, और उस में उन की वक़्ते मुलाकात की दुआ “सलाम” है, और उन की दुआ का ख़ातिमा है तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारे ज़हानों का रब है। (10)

और अगर अल्लाह लोगों को जल्द बुराई भेजता जैसे वह जल्द भलाई चाहते हैं तो पूरी हो चुकी होती उन की उम्र की मीज़ाद, पस हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते सरकशी में बहकते छोड़ देते हैं। (11)

और जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह लेटा हुआ, और बैठा हुआ, और खड़ा हुआ हमें पुकारता है, फिर जब हम दूर कर दें उस से उस की तकलीफ़, (यूँ) चल पड़ा गोया कि किसी तकलीफ़ में जो उसे पहुँची, उस ने हमें पुकारा ही न था, उसी तरह हद से बढ़ने वालों को भला कर दिखाया वह काम जो वह करते थे। (12)

और हम ने तुम से पहले कई उम्मतें हलाक कर दीं जब उन्होंने ने जुल्म किया, और उन के पास आए उन के रसूल खुली निशानियों के साथ, और वह ईमान न लाते थे, उसी तरह हम मुज़्रिमों की क़ौम को बदला देते हैं। (13)

फिर हम ने तुम्हें ज़मीन में उन के वाद जानशीन बनाया ताकि हम देखें तुम कैसे काम करते हो। (14)

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا							
दुनिया	ज़िन्दगी पर	और वह राज़ी हो गए	हमारा मिलना	उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	वेशक	
وَاطْمَأْنَنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَفْلُونَ ﴿٧﴾ أُولَٰئِكَ							
यही लोग	7	ग़ाफ़िल (जमा)	हमारी आयात	से	वह	और जो लोग	उस पर और वह मुतमइन हो गए
مَأْوُهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا							
जो लोग ईमान लाए	वेशक	8	वह कमाते थे	उस का बदला जो	जहन्नम	उन का ठिकाना	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِهِمْ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ							
उन के नीचे	से	बहती होंगी	उन के ईमान की बदौलत	उन का रब	उन्हें राह दिखाएगा	नेक	और उन्होंने ने अमल किए
الْأَنْهَارُ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٩﴾ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ							
ऐ अल्लाह	पाक है तू	उस में	उन की दुआ	9	नेमत	बागात में	नहरें
وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ							
रब	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	कि	उन की दुआ	और ख़ातिमा	सलाम	उस में और मुलाकात के वक़्त की दुआ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ							
भलाई	जल्द चाहते हैं	बुराई	लोगों को	अल्लाह	जल्द भेज देता	और अगर	10 सारे ज़हान
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي							
में	हमारी मुलाकात	वह उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	पस हम छोड़ देते हैं	उन की उम्र की मीज़ाद	उन की तरफ	तो फिर हो चुकी होती
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١﴾ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا							
वह हमें पुकारता है	कोई तकलीफ़	इन्सान	पहुँचती है	और जब	11	वह बहकते हैं	उन की सरकशी
لِجَنَّةٍ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَابِئًا ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ							
चल पड़ा	उस की तकलीफ़	उस से	हम दूर कर दें	फिर जब	खड़ा हुआ	या बैठा हुआ (और)	या अपने पहलू पर (लेटा हुआ)
كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرِّ مَسَّهُ ۚ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ							
हद से बढ़ने वालों को	भला कर दिखाया	उसी तरह	उसे पहुँची	तकलीफ़	किसी	हमें पुकारा न था	गोया कि
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ							
तुम से पहले	से	उम्मतें	और हम ने हलाक कर दीं	12	वह करते थे (उन के काम)	जो	
لَمَّا ظَلَمُوا ۖ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا							
और न	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	उन्होंने ने जुल्म किया	जब		
كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ							
हम ने बनाया तुम्हें	फिर	13	मुज़्रिमों की क़ौम	हम बदला देते हैं	उसी तरह	ईमान लाते थे	
خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾							
14	तुम काम करते हो	कैसे	ताकि हम देखें	उन के बाद	ज़मीन में	जानशीन	



وَإِذَا تُثْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ								
उम्मीद नहीं रखते	वह लोग जो	कहते हैं	वाज़ेह	हमारी आयात	उन पर (उन के सामने)	पढ़ी जाती है	और जब	
لِقَاءِنَا أَنتَ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي								
मेरे लिए	नहीं है	आप कह दें	बदलदो इसे	या	इस के अलावा	कोई कुरआन	तुम ले आओ	हम से मिलने की
أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ								
मेरी तरफ़	वहि की जाती है	मगर जो	मैं नहीं पैरवी करता	अपनी	जानिव	से	उसे बदलूँ	कि
إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ								
आप कह दें	15	बड़ा	दिन	अज़ाब	अपना रब	मैं ने नाफ़रमानी की	अगर डरता हूँ	वेशक मैं
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُكُمْ بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ								
तहकीक़ मैं रह चुका हूँ	उस की	और न ख़बर देता तुम्हें	तुम पर	न पढ़ता मैं उसे	अगर चाहता अल्लाह			
فِيكُمْ عُمَرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن								
उस से जो	बड़ा ज़ालिम	सो कौन	16	अक़ल से काम लेते तुम	सो क्या न	इस से पहले	एक उम्र	तुम में
أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ								
फ़लाह नहीं पाते	वेशक वह	उस की आयतों को	या झुटलाए	झूट	अल्लाह पर	बान्धे		
الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ								
न ज़रूर पहुँचा सके उन्हें	जो	अल्लाह के सिवा	से	और वह पूजते हैं	17	मुज़रिम (जमा)		
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ								
अल्लाह के पास	हमारे सिफ़ारिशी	यह सब	और वह कहते हैं	और न नफ़ा दे सके उन्हें				
قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ								
ज़मीन में	और न	आस्मानों में	वह नहीं जानता	उस की जो	अल्लाह	क्या तुम ख़बर देते हो	आप (स) कह दें	
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ								
लोग	और न थे	18	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बालातर	वह पाक है		
إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن								
से	पहले हो चुकी	बात	और अगर न	फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया	उम्मत वाहिद	मगर		
رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾ وَيَقُولُونَ								
और वह कहते हैं	19	वह इख़तिलाफ़ करते हैं	उस में	उस में जो	उन के दरमियान	तो फैसला हो जाता	तेरा रब	
لَوْ لَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَةً مِّن رَّبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا								
इस के सिवा नहीं	तो कह दें	उस के रब से	कोई निशानी	उस पर	क्यों न उतरी			
الْغَيْبِ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ ﴿٢٠﴾								
20	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	अल्लाह के लिए	ग़ैब	

और जब पढ़ी जाती हैं उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतें, तो जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहते हैं, उस के अलावा तुम कोई और कुरआन ले आओ या उसे बदल दो, आप (स) कह दें मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं अपनी जानिव से बदलूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मैं बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (15)

आप (स) कह दें अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर (तुम्हारे सामने) न पढ़ता, और न तुम्हें उस की ख़बर देता, मैं उस से पहले तुम में एक उम्र रह चुका हूँ, सो क्या तुम अक़ल से काम नहीं लेते? (16)

सो उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूट बान्धे या उस की आयतों को झुटलाए, वेशक मुज़रिम फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाते, (17)

और वह अल्लाह के सिवा उन्हें पूजते हैं जो उन्हें न ज़रूर पहुँचा सके और न नफ़ा दे सकें, और वह कहते हैं यह सब अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं।

आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह को उस की ख़बर देते हो जो वह नहीं जानता आस्मानों में और न ज़मीन में, वह पाक है और वह बालातर है उस से जो वह शिर्क करते हैं। (18)

और लोग न थे मगर उम्मत वाहिद, फिर उन्होंने न इख़तिलाफ़ किया, और अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले बात न हो चुकी होती तो फैसला हो जाता उन के दरमियान (उस बात का) जिस में वह इख़तिलाफ़ करते हैं। (19)

और वह कहते हैं उस के रब की तरफ़ से उस पर कोई निशानी क्यों न उतरी? तो आप (स) कह दें उस के सिवा नहीं कि ग़ैब अल्लाह के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (20)

और जब हम चखाएं लोगों को रहमत (का मज़ा) एक तकलीफ़ के बाद जो उन्हें पहुँची थी तो उसी वक़्त वह हमारी आयात में हीले (बनाने लगे) आप (स) कह दें अल्लाह सब से तेज़ खुफ़िया तदवीर (बना सकता है), वेशक़ तुम जो हीले साज़ी करते हो हमारे फ़रिश्ते लिखते हैं। (21)

वही है जो तुम्हें चलाता है खुशकी में और दर्या में, यहां तक कि जब तुम कशती में हो, और वह उन के साथ (उन्हें ले कर) पाकीज़ा हवा के साथ चलें, और वह उस से खुश हुए, उस (कशती) पर एक तुन्द ओ तेज़ हवा आई, और उन पर हर तरफ़ से मौजें आगई, और उन्होंने ने जान लिया कि उन्हें घेर लिया गया है, वह अल्लाह को पुकारने लगे उस की बन्दगी में ख़ालिस हो कर, कि अगर तू ने हमें इस से नजात दे दी तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ारों में से होंगे। (22)

फिर जब उस ने उन्हें नजात दे दी उस वक़्त वह ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगे, ऐ लोगो! इस के सिवा नहीं कि तुम्हारी शरारत (का बवाल) तुम्हारी जानों पर है, दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ाइदे (चन्द रोज़ा है) फिर तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना है फिर हम तुम्हें बतला देंगे जो तुम करते थे। (23)

इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी जैसी है, हम ने उसे आस्मान से उतारा तो उस से ज़मीन का सब्ज़ा मिला जुला निकला, जिस से लोग और चौपाए खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ ली, और वह मुज़ैयन हो गई, और ज़मीन वालों ने ख़याल किया कि वह उस पर कुदरत रखते हैं तो (अचानक) हमारा हुक्म रात में या दिन के वक़्त आया, तो हम ने उसे कटा हुआ ढेर कर दिया गोया वह कल थी ही नहीं, इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर ओ फ़िक़्र करते हैं। (24)

और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। और जिसे चाहे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत देता है। (25)

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ									
और जब	हम चखाएं	लोग	रहमत	बाद	तकलीफ़	उन्हें पहुँची	उसी वक़्त	उन के लिए	हीला
فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ (21)									
में	हमारी आयात	आप (स) कह दें	अल्लाह	सब से जल्द	खुफ़िया तदवीर	वेशक	हमारे फ़रिश्ते	वह लिखते हैं	जो तुम हीले साज़ी करते हो
هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ									
वही	जो कि	तुम्हें चलाता है	खुशकी में	और दर्या	यहां तक	जब	तुम हो	कशती में	
وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ									
और वह चलें	उन के साथ	हवा के साथ	पाकीज़ा	और वह खुश हुए	उस से	उस पर आई	एक हवा	तुन्द ओ तेज़	
وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا									
और उन पर आई	मौज	से	हर जगह (हर तरफ़)	और उन्होंने ने जान लिया	कि वह	घेर लिया गया	उन्हें	वह पुकारने लगे	
اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنُكُونَنَّ									
अल्लाह	ख़ालिस हो कर	उस के	दीन (बन्दगी)	अलबत्ता अगर	तू नजात दे हमें	से	उस	तो हम ज़रूर होंगे	
مِنَ الشَّاكِرِينَ (22) فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ									
से	शुक्रगुज़ार (जमा)	22	फिर जब	उन्हें नजात दे दी	उस वक़्त	वह	सरकशी करने लगे	में	ज़मीन
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا									
ऐ लोगो	इस के सिवा नहीं	तुम्हारी शरारत	पर	तुम्हारी जानों	फाइदे	ज़िन्दगी	दुनिया		
ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (23) إِنَّمَا مَثَلُ									
फिर	हमारी तरफ़	तुम्हें लौटना	फिर हम बतला देंगे तुम्हें	वह जो	तुम करते थे	23	इस के सिवा नहीं	मिसाल	
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ									
दुनिया की ज़िन्दगी	जैसे पानी	हम ने उसे उतारा	आस्मान से	तो मिला जुला निकला	उस से	ज़मीन का सब्ज़ा			
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ									
जिस से	खाते हैं	लोग	और चौपाए	यहां तक कि	जब	पकड़ ली	ज़मीन		
زُحْرَفَهَا وَارْيَيْنَتْ وَطَنَ أَهْلِهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا									
अपनी रौनक	और मुज़ैयन हो गई	और ख़याल किया	ज़मीन वाले	कि वह	कुदरत रखते हैं	उस पर	आया		
أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنِ									
हमारा हुक्म	रात में	या दिन के वक़्त	तो हम ने कर दिया	कटा हुआ ढेर	गोया कि	वह न थी			
بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (24) وَاللَّهُ									
कल	इसी तरह	हम खोल कर बयान करते हैं	आयतें	लोगों के लिए	जो ग़ौर ओ फ़िक़्र करते हैं	24	और अल्लाह		
يَدْعُوا إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (25)									
बुलाता है	तरफ़	सलामती का घर	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहे	तरफ़	रास्ता	सीधा	25	

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ							
और न ज़िल्लत	सियाही	उन के चहरे	और न चढ़ेगी	और ज़ियादा	भलाई है	उन्होंने भलाई की	वह लोग जो कि
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ كَسَبُوا							
उन्होंने कमाई	और वह लोग जो	26	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जन्नत वाले	वही लोग
السَّيِّئَاتِ جزَاءَ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ							
अल्लाह से	उन के लिए नहीं	ज़िल्लत	और उन पर चढ़ेगी	उस जैसा	बुराई	बदला	बुराइयां
مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا							
तारीक	रात	से	टुकड़े	उन के चहरे	ढांक दिए गए	गोया कि	बचाने वाला
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ							
हम इकट्ठा करेंगे उन्हें	और जिस दिन	27	हमेशा रहेंगे	उस में	वह सब	जहन्नम वाले	वही लोग
جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ							
और तुम्हारे शरीक	तुम	अपनी जगह	जिन्होंने शिर्क किया	उन लोगों को	हम कहेंगे	फिर	सब
فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾							
28	बन्दगी करते	हमारी	तुम न थे	उन के शरीक	और कहेंगे	उन के दरमियान	फिर हम जुदाई डाल देंगे
فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ							
तुम्हारी बन्दगी	से	हम थे	कि	और तुम्हारे दरमियान	हमारे दरमियान	गवाह	अल्लाह
لَغَفْلِينَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ							
अल्लाह की तरफ	और वह लौटाए जाएंगे	उस ने भेजा	जो	हर कोई	जांच लेगा	वहां	29
مَوْلَاهُمْ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ							
कौन	आप (स) पूछें	30	वह झूट बान्धते थे	जो	उन से	और गुम हो जाएगा	उन का (अपना) मौला
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمْنَ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ							
और आँखें	कान	मालिक है	या कौन	और ज़मीन	आस्मान	से	रिज़क देता है तुम्हें
وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرِ الْأُمْرَ							
तदबीर करता है	और कौन	ज़िन्दा	से	मुर्दा	और निकालता है	मुर्दा	से
काम	कौन	ज़िन्दा	निकालता है	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है
فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾ فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ							
सच्चा	तुम्हारा रब	अल्लाह	पस यह है तुम्हारा	31	क्या फिर तुम नहीं डरते	आप कह दें	सो वह बोल उठेंगे
فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾ كَذَلِكَ							
उसी तरह	32	तुम फिरे जाते हो	पस किधर	गुमराही	सिवाए	सच के बाद	फिर क्या रह गया
حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾							
33	ईमान न लाएंगे	कि वह	उन्होंने नाफरमानी की	वह लोग जो	पर	तेरा रब	वात सच्ची हुई

जिन लोगों ने भलाई की उन के लिए भलाई है और (उस से भी) ज़ियादा, और उन के चहरों पर न सियाही चढ़ेगी और न ज़िल्लत, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (26)

और जिन लोगों ने बुराइयां कमाई (उन का) बदला उस जैसी बुराई है, और उन पर ज़िल्लत चढ़ेगी, उन के लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं, गोया उन के चहरे ढांक दिए गए तारीक रात के टुकड़े से, वही लोग जहन्नम वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (27)

और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे फिर उन लोगों को कहेंगे जिन्होंने शिर्क किया अपनी अपनी जगह (रहो) तुम और तुम्हारे शरीक, फिर हम उन के दरमियान जुदाई डाल देंगे, और उन के शरीक कहेंगे, तुम हमारी बन्दगी न करते थे। (28)

पस हमारे और तुम्हारे दरमियान काफी है अल्लाह गवाह, कि हम तुम्हारी बन्दगी से बेख़बर थे। (29)

वहां हर कोई जांच लेगा जो उस ने आगे भेजा था और वह अपने सच्चे मौला अल्लाह की तरफ लौटाए जाएंगे और उन से गुम हो जाएगा जो वह झूट बान्धते थे। (30)

आप (स) पूछें कौन आस्मान और ज़मीन से तुम्हें रिज़क देता है? या कौन कान और आँखों का मालिक है? और कौन ज़िन्दा को मुर्द से निकालता है? और निकालता है मुर्द को ज़िन्दा से? और कौन कामों की तदबीर करता है? सो वह बोल उठेंगे, अल्लाह! आप (स) कहें क्या फिर तुम डरते नहीं? (31)

पस यह है अल्लाह! तुम्हारा सच्चा रब, सच के बाद गुमराही के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिरे जाते हो? (32)

उसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर जिन्होंने नाफरमानी की, सच्ची हुई कि वह ईमान न लाएंगे, (33)

आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है? जो पहली बार पैदा करे फिर उसे लौटाए, आप(स) कह दें अल्लाह पहली बार पैदा करता है फिर उसे लौटाएगा, पस तुम किधर पलटे जाते हो? (34) आप (स) पूछें क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई) है जो सहीह राह बताए? आप (स) कह दें अल्लाह सहीह राह बताता है, क्या जो सहीह राह बताता है ज़ियादा हकदार है कि उस की पैरवी की जाए? या वह जो (खुद भी) राह नहीं पाता मगर यह कि उसे राह दिखाई जाए, सो तुम्हें क्या हो गया है? कैसा फ़ैसला करते हो? (35) और उन में से अक्सर पैरवी नहीं करते मगर गुमान की, वेशक गुमान हक़ (की मुअरिफ़त) का कुछ भी काम नहीं देता, वेशक अल्लाह खूब जानता है जो वह करते हैं। (36) और यह कुरआन (ऐसा) नहीं कि कोई अल्लाह के (हुक़्म के) बग़ैर (अपनी तरफ़ से) बना ले, लेकिन उस की तसदीक़ करने वाला है जो उस से पहले (नाज़िल हुआ) और किताब की तफ़्सील है, उस में कोई शक़ नहीं कि यह तमाम ज़हानों के रब (की तरफ़) से है। (37) क्या वह कहते हैं? कि वह उसे बना लाया है, आप (स) कह दें पस उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और जिसे तुम बुला सको, बुला लो, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। (38) बल्कि उन्होंने ने उसे झुटलाया जिस के इल्म पर उन्होंने ने काबू नहीं पाया, और उस की हकीक़त अभी उन के पास नहीं आई, उसी तरह उन से पहलों ने झुटलाया, पस आप (स) देखें कैसा हुआ ज़ालिमों का अन्जाम? (39) और उन में से बाज़ उस पर ईमान लाएंगे, और उन में से बाज़ उस पर ईमान न लाएंगे, और तेरा रब फ़साद करने वालों को खूब जानता है। (40) और अगर वह आप (स) को झुटलाए तो आप (स) कह दें मेरे लिए मेरे अमल, और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, तुम उस के जवाबदह नहीं जो मैं करता हूँ, और मैं उस का जवाबदह नहीं जो तुम करते हो। (41)

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ									
आप (स) कह दें	फिर उसे लौटाए	मख़लूक	पहली बार पैदा करे	जो	तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप (स) पूछें	अल्लाह
يَبْدُوا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنْتُمْ تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ									
तुम्हारे शरीक	से	क्या	आप(स) पूछें	34	पलटे जाते हो तुम	पस किधर	उसे लौटाएगा	फिर	मख़लूक पहली बार पैदा करता है
مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي									
राह बताता है	पस क्या जो	सहीह	राह बताता है	अल्लाह	आप कहें	हक़ की तरफ़ (सहीह)	राह बताए	जो	
إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِي فَمَا لَكُمْ									
सो तुम्हें क्या हुआ	उसे राह दिखाई जाए	यह कि	मगर	वह राह नहीं पाता	या जो	पैरवी की जाए	कि	ज़ियादा हक़ दार	हक़ की तरफ़ (सही)
كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي									
नहीं काम देता	गुमान	वेशक	मगर गुमान	उन के अक्सर	और पैरवी नहीं करते	35	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	
مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هَذَا									
यह - इस	और नहीं है	36	वह करते हैं	वह जो	खूब जानता है	वेशक अल्लाह	कुछ भी	हक़	से (का)
الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي									
उस की जो	तसदीक़	और लेकिन	अल्लाह के बग़ैर	से	कि वह बनाले	कुरआन			
بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾									
37	तमाम ज़हानों	रब	से	उस में	कोई शक़ नहीं	किताब	और तफ़्सील	उस से पहले	
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنْ									
जिसे	और बुला लो तुम	उस जैसी	एक ही सूरत	पस ले आओ तुम	आप (स) कह दें	वह उसे बना लाया है	वह कहते हैं	क्या	
اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوا									
उन्होंने ने झुटलाया	बल्कि	38	सच्चे	तुम हो	अगर	अल्लाह के सिवा	से	तुम बुला सको	
بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَبَ									
झुटलाया	उसी तरह	उस की हकीक़त	उन के पास आई	और अभी नहीं	उस के इल्म पर	नहीं काबू पाया	वह जो		
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾									
39	ज़ालिम (जमा)	अन्जाम	हुआ	कैसा	पस आप (स) देखें	उन से पहले	वह लोग जो		
وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ									
खूब जानता है	और तेरा रब	उस पर	नहीं ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से	उस पर	ईमान लाएंगे	जो (बाज़)	और उन में से
بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ									
तुम्हारे अमल	और तुम्हारे लिए	मेरे अमल	मेरे लिए	तो कह दें	वह तुम्हें झुटलाए	और अगर	40	फ़साद करने वालों को	
أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾									
41	तुम करते हो	उस का जो	जवाबदह नहीं	और मैं	मैं करता हूँ	उस के जो	जवाबदह नहीं	तुम	



وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ							
और उन में से	जो (बाज़)	कान लगाते हैं	आप (स) की तरफ़	तो क्या तुम	सुनाओगे	वहरे	ख़्वाह
النَّاسِ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا							
वह अक्ल न रखते हों	42	और उन से	जो (बाज़)	देखते हैं	आप (स) की तरफ़	पस क्या तुम	राह दिखा दोगे
بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾ وَإِنَّا لَنُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَى							
ख़्वाह	वह देखते न हों	43	वेशक अल्लाह	जुल्म नहीं करता	लोग	कुछ भी	और लेकिन
مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَأِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ							
लोग	अपने आप पर	जुल्म करते हैं	44	और जिस दिन	जमा करेगा उन्हें	गोया	वह न रहे थे
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ							
एक घड़ी	दिन से (की)	वह पहचानेंगे	आपस में	अलबत्ता	ख़सारे में रहे	वह लोग	उन्होंने ने झुटलाया
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا							
अल्लाह से मिलने को	वह न थे	हिदायत पाने वाले	45	और अगर	हम तुझे दिखा दें	बाज़ (कुछ)	वह जो
شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً							
इन्साफ़ के साथ	और वह	जुल्म नहीं किए जाते	47	और वह कहते हैं	कब	यह	वादा
وَلَا يَسْتَفْهِمُونَ ﴿٤٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا							
चाहे अल्लाह	हर एक उम्मत के लिए	एक वक़्त मुक़र्रर	जब	आजाएगा	उन का वक़्त	पस न ताख़ीर करेंगे वह	एक घड़ी
مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَتَمَّ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ							
और न	जल्दी करेंगे वह	49	आप (स) कह दें	भला तुम देखो	अगर तुम पर आए	उस का अज़ाब	रात को
آلَيْنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا							
क्या है वह	जल्दी करते हैं	उस से - उस की	मुज़्रिम (जमा)	50	क्या फिर	जब	वाक़े होगा
دُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾							
अब	और अलबत्ता तुम थे	उस की	तुम जल्दी मचाते	51	फिर	कहा जाएगा	उन लोगों को जो
تُؤْتَوْنَ عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾							
तुम ख़ो	अज़ाब	हमेशगी	क्या नहीं	तुम्हें बदला दिया जाता	मगर	वह जो	तुम कमाते थे

और उन में से बाज़ कान लगाते हैं आप (स) की तरफ़, तो क्या तुम वहरों को सुनाओगे? अगरचे वह अक्ल न रखते हों। (42) और उन में से बाज़ देखते हैं आप(स) की तरफ़, तो क्या आप(स) अन्धों को राह दिखा देंगे? अगरचे वह देखते न हों। (43) वेशक अल्लाह जुल्म नहीं करता लोगों पर कुछ भी, लेकिन लोग अपने आप पर जुल्म करते हैं। (44) और जिस दिन (योमे हशर) वह उन्हें जमा करेगा गोया वह (दुनिया में) न रहे थे मगर दिन की एक घड़ी, आपस में पहचानेंगे, अलबत्ता वह ख़सारे में रहे जिन्होंने ने झुटलाया अल्लाह से मिलने को, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (45) और अगर हम तुम्हें बाज़ वादे दिखा दें जो हम उन से कर रहे हैं या हम तुम्हें (दुनिया से) उठा लें, पस उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह उस पर गवाह है जो वह करते हैं। (46) हर एक उम्मत के लिए एक रसूल है, पस जब उन का रसूल आगया, उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और उन पर जुल्म नहीं किया जाता। (47) और वह कहते हैं यह वादा कब (पूरा) होगा? अगर तुम सच्चे हो। (48) आप (स) कह दें मैं अपनी जान के लिए मालिक नहीं हूँ किसी नुक़सान का न नफ़ा का, मगर जो अल्लाह चाहे, हर एक उम्मत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, जब उन का वक़्त आजाएगा पस न वह एक घड़ी ताख़ीर करेंगे न जल्दी कर सकेंगे। (49) आप (स) कह दें भला तुम देखो अगर तुम पर उस का अज़ाब आए रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या है जिस की मुज़्रिम जल्दी कर रहे हैं? (50) क्या फिर जब वाक़े हो जाएगा (उस वक़्त) तुम उस पर ईमान लाओगे? अब (मानते हो) अलबत्ता तुम उस की जल्दी मचाते थे। (51) फिर ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम हमेशगी का अज़ाब ख़ो, तुम्हें वही बदला दिया जाता है जो तुम कमाते थे। (52)

और आप (स) से पूछते हैं क्या वह सच है? आप (स) कहें हों! मेरे रब की कसम! वेशक वह ज़रूर सच है, और तुम आजिज़ करने वाले नहीं। (53)

और अगर हर ज़ालिम शख्स के लिए (वह सब कुछ) हो जो ज़मीन में है, वह उस को फिदये में देदे, और वह चुपके चुपके पशेमान होंगे जब अज़ाब देखेंगे, और उन के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला होगा, और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (54)

याद रखो! अल्लाह के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, याद रखो! वेशक अल्लाह का वादा सच है, लेकिन उन के अक्सर जानते नहीं। (55)

वही ज़िन्दगी देता है, और वही मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (56)

ऐ लोगो! तहकीक़ तुम्हारे पास आ गई नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से, और शिफ़ा उस (रोग) के लिए जो दिलों में है, और मोमिनों के लिए हिदायत ओ रहमत। (57) आप (स) कहें, अल्लाह के फ़ज़ल से, और उस की रहमत से, सो वह उस पर खुशी मनाएँ, यह उन (सब) से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (58)

आप (स) कह दें, भला देखो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क उतारा, फिर तुम ने उस में से कुछ हARAM बना लिया और कुछ हलाल, आप (स) कह दें, क्या अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया? या अल्लाह पर झूट बान्धते हो? (59)

और उन लोगों का क्या खयाल है? जो घड़ते हैं अल्लाह पर झूट, क़ियामत के दिन (उन का क्या हाल होगा) वेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (60) और तुम नहीं होते किसी हाल में, और न उस में से कुछ कुरआन पढ़ते हो, और न कोई अमल करते हो, मगर हम तुम पर गवाह (बाख़्बर) होते हैं जब तुम उस में मशगूल होते हो, और नहीं तुम्हारे रब से ग़ाइब एक ज़री बराबर भी ज़मीन में और न आस्मान में, और न उस से छोटा और न बड़ा, मगर रौशन किताब में है। (61)

53	आजिज़ करने वाले	तुम हो	और नहीं	ज़रूर सच	वेशक वह	मेरे रब की कसम	हां	आप कह दें	वह	क्या सच है	और आप (स) से पूछते हैं
وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ											
पशमान	और वह चुपके चुपके होंगे	उस को	अलबत्ता फ़िदया देदे	ज़मीन में	जो कुछ किया (ज़ालिम)	हर एक शख्स के लिए	हो	और अगर			
54	जुल्म न किए जाएंगे	और वह	इन्साफ के साथ	उन के दरमियान	और फैसला होगा	अज़ाब	वह देखेंगे	जब			
أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ 55 هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ 56											
और लेकिन	सच	अल्लाह का वादा	वेशक	याद रखो	और ज़मीन में	आस्मानों में	अल्लाह के लिए जो	वेशक	याद रखो		
57	तुम लौटाए जाओगे	और उस की तरफ	और मारता है	ज़िन्दगी देता है	वही	55	जानते नहीं	उन के अक्सर			
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ 57 قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ											
और उस की रहमत से	अल्लाह	फ़ज़ल से	आप कह दें	57	मोमिनों के लिए	ओ रहमत	और हिदायत				
فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ 58 قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ											
जो उस ने उतारा	भला देखो	आप कह दें	58	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	वह - यह	वह खुशी मनाएं	सो उस पर		
اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ											
हुक्म दिया	क्या अल्लाह	आप (स) कह दें	और कुछ हलाल	कुछ हराम	उस से	फिर तुम ने बना लिया	रिज़्क	से	तुम्हारे लिए	अल्लाह	
لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ 59 وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ											
अल्लाह पर	घड़ते हैं	वह लोग जो	खयाल	और क्या	59	तुम झूट बान्धते हो	अल्लाह पर	या	तुम्हें		
الْكَذِبِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ											
और लेकिन	लोगों पर	फ़ज़ल करने वाला	वेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन	झूट						
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ 60 وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ											
से - कुछ	उस से	और नहीं पढ़ते	किसी हाल में	और नहीं होते तुम	60	शुक्र नहीं करते	उन के अक्सर				
قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ											
जब तुम मशगूल होते हो	गवाह	तुम पर	हम होते हैं	मगर	कोई अमल	और नहीं करते	कुरआन				
فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا											
और न	ज़मीन में	एक ज़री	बराबर	से	तुम्हारा रब	से	गाइब	और नहीं	उस में		
فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ 61											
61	किताबे रौशन	में	मगर	बड़ा	और न	उस से	छोटा	और न	आस्मान	में	

آلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾								
याद रखो	वेशक	अल्लाह के दोस्त	न कोई खौफ़	उन पर	और न	वह	ग़मगीन होंगे	62
الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا								
वह लोग जो	ईमान लाए	और वह तक्वा करते रहे	63	उन के लिए	वशाहत	में	दुनिया कि ज़िन्दगी	
وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ								
और में	आखिरत	तबदीली नहीं	वातों में	अल्लाह	यह	वह		
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ								
कामयाबी	बड़ी	64	और न	तुम्हें ग़मगीन करे	उन की बात	वेशक	ग़लबा	अल्लाह के लिए
جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ آ لَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ								
तमाम	वह	सुनने वाला	जानने वाला	65	याद रखो	वेशक	अल्लाह के लिए	जो कुछ आस्मानों में
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ								
और जो	ज़मीन में	क्या - किस	पैरवी करते हैं	वह लोग जो	पुकारते हैं	सिवाए		
اللَّهِ شُرَكَاءُ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا								
अल्लाह	शरीक (जमा)	वह नहीं पैरवी करते	मगर	गुमान	और नहीं	वह	मगर (सिर्फ)	
يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْآلِلَ لِتَسْكُنُوا								
अटकलें दौड़ाते हैं	66	वही	जो - जिस	बनाया	तुम्हारे लिए	रात	ताकि तुम सुकून हासिल करो	
فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنْ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾								
उस में	और दिन	दिखाने वाला (रौशन)	वेशक	उस में	अलबत्ता निशानियाँ	सुनने वाले लोगों के लिए	67	
قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا								
वह कहते हैं	बना लिया	अल्लाह	बेटा	वह पाक है	वह	वेनियाज़	उस के लिए	जो
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ								
आस्मानों में	और जो	ज़मीन में	नहीं	तुम्हारे पास	कोई			
سُلْطَنٍ بِهَٰذَا اتَّفَقُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾								
दलील	उस के लिए	क्या तुम कहते हो	अल्लाह पर	जो	तुम नहीं जानते	68		
قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ								
आप (स) कह दें	वेशक	वह लोग जो	घड़ते हैं	अल्लाह पर	झूट			
لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ								
वह फ़लाह नहीं पाएंगे	69	कुछ फाइदा	दुनिया में	फिर	हमारी तरफ़	उन को लौटना	फिर	
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾								
हम चखाएंगे उन्हें	अज़ाब	शदीद	उस के बदले	वह कुफ़ करते थे	70			

याद रखो! वेशक (जो) अल्लाह के दोस्त हैं न कोई खौफ़ उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (62)

और जो लोग ईमान लाए और तक्वा (खौफ़े खुदा और परहेज़गारी) करते रहे। (63)

उन के लिए वशाहत है दुनिया की ज़िन्दगी में और आखिरत में, अल्लाह की बातों में कोई तबदीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। (64)

और उन की बात तुम्हें ग़मगीन न करे। वेशक तमाम ग़लबा अल्लाह के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (65)

याद रखो! वेशक जो आस्मानों में और ज़मीन में है अल्लाह के लिए है, और किसी की पैरवी (नहीं) करते वह लोग जो अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं मगर (सिर्फ) गुमान की पैरवी करते हैं, और वह सिर्फ अटकलें दौड़ाते हैं। (66)

वही है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन रौशन, वेशक उस में सुनने वाले लोगों के लिए निशानियाँ हैं। (67)

वह कहते हैं अल्लाह ने बना लिया (अपना) बेटा। वह पाक है, वह वेनियाज़ है, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है, तुम्हारे पास नहीं है उस के लिए कोई दलील, क्या तुम अल्लाह पर वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं? (68)

आप (स) कह दें, वेशक वह लोग जो अल्लाह पर झूट घड़ते हैं फ़लाह (दो ज़हान की कामयाबी) नहीं पाएंगे। (69)

दुनिया में कुछ फ़ाइदा है, फिर उन को हमारी तरफ़ लौटना है, फिर हम उन्हें शदीद अज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे उस के बदले जो वह कुफ़ करते थे। (70)

और आप (स) उन्हें नूह (अ) का किस्सा पढ़ कर सुनाएं, जब उस ने अपनी कौम से कहा, ऐ मेरी कौम! अगर तुम पर गारा है मेरा कियाम और मेरा अल्लाह की आयतों से नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपना काम मुर्कर कर लो (ताकि) फिर तुम्हें अपने काम पर कोई शुबाह न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो, और मुझे मोहलत न दो। (71)

फिर अगर तुम मुँह फेर लो तो मैं ने तुम से कोई अजर नहीं मांगा, मेरा अजर तो सिर्फ अल्लाह पर है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं रहूँ फरमावरदारों में से। (72)

तो उन्होंने ने उसे (नूह अ) को झुटलाया, सो हम ने बचा लिया उसे और उन्हें जो उस के साथ कश्ती में थे, और हम ने उन्हें जॉनशीन बनाया, और उन लोगों को गुर्क कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो देखो (उन लोगों का) अन्जाम कैसा हुआ? जिन्हें डराया गया था। (73)

फिर हम ने उस (नूह अ) के बाद कई रसूल उन की कौमों की तरफ भेजे तो वह उन के पास रौशन दलीलों के साथ आए, सो उन से न हुआ के वह ईमान ले आएँ उस (बात) पर जिसे वह उस से कब्ल झुटला चुके थे, इसी तरह हम हद से बढ़ने वालों के दिलों पर मुहर लगाते हैं। (74)

फिर हम ने भेजा उन के बाद मूसा (अ) और हारून (अ) को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के सरदारों (दरबारियों) की तरफ, तो उन्होंने ने तकब्बुर किया और वह गुनाहगार लोग थे। (75)

तो जब उन के पास हमारी तरफ से हक पहुँचा तो वह कहने लगे, बेशक यह अलबत्ता खुला जादू है। (76)

मूसा (अ) ने कहा, क्या तुम हक की निस्वत (ऐसा) कहते हो? जब वह तुम्हारे पास आगया, क्या यह जादू है? और जादूगर कामयाब नहीं होते। (77)

वह बोले क्या तू हमारे पास (इस लिए) आया है कि हमें उस से फेर दे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, और हो जाए तुम दोनों के लिए ज़मीन में बड़ाई (सरदारी मिल जाए) और हम तुम दोनों के मानने वालों में से नहीं। (78)

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ									
तुम पर	गरां	अगर है	ऐ मेरी कौम	अपनी कौम से	जब उस ने कहा	नूह (अ)	ख़बर (किस्सा)	उन पर (उन्हें)	और पढ़ो
مَقَامِي وَتَذَكِيرِي بِآيَةِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا									
पस तुम मुर्कर कर लो	मैं ने भरोसा किया	पस अल्लाह पर	अल्लाह की आयतों से	और मेरा नसीहत करना	मेरा क़ियाम				
أَمْرُكُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ									
मेरे साथ	तुम कर गुज़रो	फिर	कोई शुबाह	तुम पर	तुम्हारा काम	न रहे	फिर	और तुम्हारे शरीक	अपना काम
وَلَا تُنْظِرُونَ ﴿٧١﴾ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرِي									
मेरा अजर	तो - सिर्फ़	कोई अजर	तो मैं ने नहीं मांगा तुम से	तुम मुँह फेर लो	फिर अगर	71	और मुझे मोहलत न दो		
إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوهُ									
तो उन्होंने ने उसे झुटलाया	72	फरमावरदार (जमा)	से	मैं रहूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	अल्लाह पर	मगर (सिर्फ़)	
فَنَجَّيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَعْرَفْنَا									
और हम ने गुर्क कर दिया	जांशीन	और हम ने बनाया उन्हें	कश्ती में	उस के साथ	और जो	सो हम ने बचा लिया उसे			
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٧٣﴾									
73	डराए गए लोग	अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखो	हमारी आयतों को	उन्होंने ने झुटलाया	वह लोग जो	
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ									
रौशन दलीलों के साथ	वह आए उन के पास	उन की कौम	तरफ़	कई रसूल	उस के बाद	हम ने भेजे	फिर		
فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ									
पर	हम मुहर लगाते हैं	उसी तरह	उस से कब्ल	उस को	उन्होंने ने झुटलाया	उस पर जो	सो उन से न हुआ कि वह ईमान ले आएँ		
قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ									
तरफ़	और हारून (अ)	मूसा (अ)	उन के बाद	हम ने भेजा	फिर	74	हद से बढ़ने वाले	दिल (जमा)	
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾									
75	गुनाहगार (जमा)	लोग	और वह थे	तो उन्होंने ने तकब्बुर किया	अपनी निशानियों के साथ	उस के सरदार	फ़िरऔन		
فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾									
76	खुला	अलबत्ता जादू	यह	बेशक	वह कहने लगे	हमारी तरफ़	से	हक़	आया उन के पास तो जब
قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ هَذَا ۖ وَلَا يُفْلِحُ									
और कामयाब नहीं होते	यह	क्या जादू	वह आगया तुम्हारे पास	हक़ के लिए (निस्वत) जब	क्या तुम कहते हो	मूसा (अ)	कहा		
السَّحَرُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا أَجِئْنَا لِنُلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا									
उस पर अपने बाप दादा	पाया हम ने	उस से जो	कि फेर दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	वह बोले	77	जादूगर		
وَتَكُونُ لَكُمْ الْكِبْرِيَآءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾									
78	ईमान लाने वालों में से	तुम दोनों के लिए	हम	और नहीं	ज़मीन में	बड़ाई	तुम दोनों के लिए	और हो जाए	



وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ									
जादूगर	आ गए	फिर जब	79	इल्म वाला	जादूगर	हर	ले आओ मेरे पास	फिरऔन	और कहा
قَالَ لَهُمْ مُوسَى اَلْقُوا مَا اَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُوسَى									
मूसा (अ)	कहा	उन्होंने डाला	फिर जब	80	डालने वाले हो	तुम	जो	तुम डालो	मूसा (अ)
مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ									
काम	नहीं दुरुस्त करता	बेशक अल्लाह	अभी वातिल कर देगा उसे	बेशक अल्लाह	जादू	तुम लाए हो	जो		
الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾									
82	मुजरिम (गुनाहगार)	नापसन्द करें	ख्वाह	अपने हुक्म से	हक्	अल्लाह	और हक् कर देगा	81	फ़साद करने वाले
فَمَا اٰمَنَ لِمُوسَى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ									
फिरऔन	से (के)	खौफ की वजह से	उस की कौम	से	चन्द लड़के	मगर	मूसा (अ) पर	ईमान लाया	सो न
وَمَلَايِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ									
और बेशक वह	ज़मीन	में	सरकश	फिरऔन	और बेशक	वह आफ़त में डाले उन्हें	कि	और उन के सरदार	
لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ									
अल्लाह पर	ईमान लाए	तुम	अगर	ऐ मेरी कौम	मूसा (अ)	और कहा	83	हद से बढ़ने वाले	अलबत्ता - से
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا									
हम ने भरोसा किया	अल्लाह पर	तो उन्होंने ने कहा	84	फरमांबरदार (जमा)	तुम हो	अगर	भरोसा करो	तो उस पर	
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِّنْ									
से	अपनी रहमत से	और हमें छुड़ादे	85	ज़ालिम (जमा)	कौम का	तख़्ता-ए-मशक	न बना हमें	ऐ हमारे रब	
الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَا اِلٰى مُوسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّآ									
कि घर बनाओ	और उस का भाई	मूसा (अ)	तरफ	और हम ने वहि भेजी	86	काफ़िर (जमा)	कौम		
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَّاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيمُوا									
और काइम करो	किबला रू	अपने घर	और बनाओ	घर	मिसर में	अपनी कौम के लिए			
الصَّلٰوةَ وَّبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَا اِنَّكَ									
बेशक तू	ऐ हमारे रब	मूसा (अ)	और कहा	87	मोमिनीन	और खुशख़बरी दो	नमाज़		
اَتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زَيْنَةً وَّامْوَآلًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا									
दुनिया की ज़िन्दगी	में	और माल (जमा)	ज़ीनत	और उस के सरदार	फिरऔन	तू ने दिए			
رَبَّنَا لِیُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَنّٰی اَمْوَالِهِمْ وَاَشْدُدْ									
और मुहर लगा दे	उन के माल	पर	तू मिटा दे	ऐ हमारे रब	तेरा रास्ता	से	कि वह गुमराह करें	ऐ हमारे रब	
عَلٰی قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰی يَرَوْا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾									
88	दर्दनाक	अज़ाब	वह देख लें	यहां तक कि	कि वह ईमान न लाएं	उन के दिलों पर			

और फिरऔन ने कहा मेरे पास हर इल्म वाला जादूगर ले आओ। (79) फिर जब जादूगर आगए तो मूसा (अ) ने उन से कहा तुम डालो, जो डालने वाले हो (तुम्हें डालना है)। (80) फिर उन्होंने ने डाला तो मूसा (अ) ने कहा तुम जो लाए हो जादू है, बेशक अल्लाह अभी उसे वातिल करदेगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम दुरुस्त नहीं करता। (81) और अल्लाह हक् को अपने हुक्म से हक् (साबित) कर देगा अगरचे गुनाहगार नापसन्द करें। (82) सो मूसा (अ) पर कोई ईमान न लाया मगर उस की कौम के चन्द लड़के खौफ की वजह से फिरऔन और उन के सरदारों के, कि वह उन्हें आफ़त में न डाल दे, और बेशक फिरऔन ज़मीन (मुल्क) में सरकश था, और बेशक वह हद से बढ़ने वालों में से था। (83) और मूसा (अ) ने कहा ऐ मेरी कौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फरमांबरदार हो। (84) तो उन्होंने ने कहा हम ने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब! हमें न बना ज़ालिमों की कौम का तख़्ता-ए-मशक। (85) और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों की कौम से छुड़ादे। (86) और हम ने मूसा (अ) और उस के भाई की तरफ वहि भेजी कि अपनी कौम के लिए मिसर में घर बनाओ और बनाओ अपने घर किबला रू (नमाज़ की जगह), और नमाज़ काइम करो, और मोमिनों को खुशख़बरी दो। (87) और मूसा (अ) ने कहा ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फिरऔन और उस के लशकर को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ीनत और बहुत से माल दिए हैं, ऐ हमारे रब! कि वह तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उन के माल मिटा दे, और उन के दिलों पर मुहर लगा दे कि वह ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब देख लें। (88)

अगरचे उन के पास हर निशानी  
आजाए, यहां तक कि वह दर्दनाक  
अजाव देख लें। (97)

97	दर्दनाक	अज्ञाव	वह मेरे हैं	यहां तक कि	हर मिलाने	आजाए उन के साथ	ख्वाह	96	वह ईमान न लाए
----	---------	--------	----------------	---------------	--------------	-------------------	-------	----	------------------

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَتَنْفَعَهَا إِيْمَانُهَا إِلَّا قَوْمٌ يُنُوسُونَ لَمَّا								
जब	कौम यूनस (अ)	मगर	उस का ईमान	तो नफ़ा देता उस को	कि वह ईमान लाती	कोई बस्ती	होई	पस क्यों न
أَمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ								
और नफ़ा पहुँचाया उन्हें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुसवाई	अज़ाब	उन से	हम ने उठा लिया	वह ईमान लाए	
إِلَىٰ حِينٍ ۖ (98) وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا								
वह सब के सब	ज़मीन में	जो	अलबत्ता ईमान ले आते	तेरा रब	चाहता	और अगर	98	एक सुददत तक
أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ (99) وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ								
किसी शख्स के लिए	और नहीं है	99	मोमिन (जमा)	वह हो जाए	यहां तक कि	लोग	मजबूर करेगा	पस क्या तू
أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ								
वह लोग जो	पर	गन्दगी	और वह डालता है	हुक्म इलाही	मगर (बग़ैर)	ईमान लाए	कि	
لَا يَعْقِلُونَ ۚ (100) قُلْ أَنْظِرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي								
और नहीं फाइदा देती	और ज़मीन	आस्मानों	में	क्या है	देखो	आप कह दें	100	अक्ल नहीं रखते
الْآيَاتِ وَالنُّذُرِ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ (101) فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا								
मगर	वह इन्तिज़ार करते हैं	तो क्या	101	वह नहीं मानते	लोग	से	और डराने वाले	निशानियाँ
مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ								
तुम्हारे साथ	बेशक मैं	पस तुम इन्तिज़ार करो	आप (स) कह दें	उन से पहले	जो गुज़र चुके	वह लोग	दिन (वाकिफ़ात)	जैसे
مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ۚ (102) ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ								
उसी तरह	वह ईमान लाए	और वह लोग जो	अपने रसूल (जमा)	हम बचालेते हैं	फिर	102	इन्तिज़ार करने वाले	से
حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِينَ ۚ (103) قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ								
अगर तुम हो	ऐ लोगो!	आप (स) कह दें	103	मोमिनीन	हम बचालेंगे	हक हम पर		
فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ								
अल्लाह	सिवाए	तुम पूजते हो	वह जो कि	तो मैं इबादत नहीं करता	मेरे दिन	से	किसी शक में	
وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُم ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ								
से	मैं हूँ	कि	और मुझे हुक्म दिया गया	तुम्हें उठालेता है	वह जो	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	और लेकिन	
الْمُؤْمِنِينَ ۚ (104) وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۖ وَلَا تَكُونَنَّ								
और हरगिज़ न होना	सब से मुँह मोड़ कर	दिन के लिए	अपना मुँह	सीधा रख	और यह कि	104	मोमिनीन	
مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ (105) وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ								
न तुझे नफ़ा दे	जो	अल्लाह	सिवाए	और न पुकार	105	मुश्रिकीन	से	
وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۚ (106)								
106	ज़ालिम (जमा)	से	उस वक़्त	तो बेशक तू	तू ने किया	फिर अगर	नुक़सान पहुँचाए	और न

पस क्यों न हुई कोई बस्ती कि वह ईमान लाती तो उस को उस का ईमान नफ़ा देता, मगर यूनस(अ) की कौम (कि वह ईमान ले आई), जब वह ईमान लाए तो हम ने उन से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अज़ाब उठा लिया, और उन्हें एक सुददत तक नफ़ा पहुँचाया। (98) और अगर चाहता तेरा रब अलबत्ता जो ज़मीन में है सब के सब ईमान ले आते, पस क्या तू लोगों को मजबूर करेगा? यहां तक कि वह मोमिन हो जाए। (99) और किसी शख्स के लिए (अपने इख्तियार में) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान ले आए, और वह डालता है (कुफ़ की) गन्दगी उन लोगों पर जो अक्ल नहीं रखते। (100) आप (स) कह दें देखो क्या कुछ है? आस्मानों में और ज़मीन में। और निशानियाँ और डराने वाले (रसूल) उन लोगों को फाइदा नहीं देते जो नहीं मानते। (101) तो क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर उन्हीं लोगों जैसे वाकिफ़ात का जो उन से पहले गुज़र चुके, आप (स) कह दें पस तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों से हूँ। (102) फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को, और उसी तरह उन को जो ईमान लाए, हम पर हक़ (ज़िम्मा) है हम बचालेंगे मोमिनों को। (103) आप (स) कह दें, ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दिन (के मुतअल्लिक) किसी शक में हो तो मैं इबादत नहीं करता उन की जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, लेकिन मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें (दुनिया से) उठा लेता है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मोमिनों में से रहूँ। (104) और यह कि अपना मुँह सब से मोड़ कर दिन के लिए सीधा रख, और हरगिज़ मुश्रिकों में से न होना। (105) और अल्लाह के सिवा उसे न पुकार जो न तुझे नफ़ा दे सके, और न कोई नुक़सान पहुँचा सके, फिर अगर तू ने (ऐसा) किया तो उस वक़्त तू बेशक ज़ालिमों में से होगा। (106)

और अगर अल्लाह तुझे पहुँचाए कोई नुकसान तो उस के सिवा कोई उस को हटाने वाला नहीं, और अगर वह तेरा भला चाहे तो कोई उस के फज़ल को रोकने वाला नहीं, वह पहुँचाता है उस को अपने बन्दों में से जिस को चाहता है, और वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (107)

आप (स) कह दें, ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ पहुँच चुका, तो जिस ने हिदायत पाई सिर्फ़ अपनी जान के लिए हिदायत पाई, और जो गुमराह हुआ तो सिर्फ़ अपने बुरे को गुमराह हुआ, और मैं तुम पर मुख्तार नहीं हूँ, (108)

और (उस की) पैरवी करो जो तुम्हारी तरफ़ बहि हुई है, और सबर करो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (109)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है अलिफ़-लाम-रा, यह किताब है, इस की आयात मज़बूत की गई, फिर तफ़सील की गई हिक्मत वाले, ख़बरदार के पास से। (1)

यह कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, वेशक मैं उस (की तरफ़) से तुम्हारे लिए डराने वाला और खुशख़बरी देने वाला हूँ। (2)

और यह कि मग़फ़िरत तलब करो अपने रब की, फिर उस की तरफ़ रुज़ूअ करो वह तुम्हें फ़ाइदा पहुँचाएगा अच्छा सामान, एक मुक़र्रर वक़्त तक, और देगा हर फज़ल वाले को अपना फज़ल, और अगर तुम फिर जाओ तो वेशक मैं तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। (3)

अल्लाह की तरफ़ तुम्हें लौटना है, और वह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (4) याद रखो! वेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि उस (अल्लाह) से छुपालें, याद रखो! जब वह अपने कपड़े पहनते हैं वह जानता है जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं, वेशक वह दिलों के भेद जानने वाला है। (5)

وَأَنْ يَّمْسَسَكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ									
और	पहुँचाए	अल्लाह	कोई	तो नहीं	उस	उस के	और	तेरा	चाहे
अगर	तुझे		नुक़सान	हटाने	का	सिवा	अगर		
بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ									
और	भला	तो नहीं	उस के	वह	उस को	जिसे	चाहता है	से	अपने बन्दे
वह	रोकने वाला	कोई	फज़ल को	पहुँचाता है					
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ (107) قُلْ يَأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ									
वख़्शने वाला	निहायत	107	आप (स)	ऐ लोगो!	पहुँच चुका	तुम्हारे	हक़	से	
	मेहरबान		कह दें		पास				
رَبِّكُمْ فَمَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا									
तुम्हारा	तो जो	हिदायत	तो सिर्फ़	उस ने	अपनी जान	और	गुमराह	तो सिर्फ़	
रब		पाई		हिदायत	के लिए	जो	हुआ		
يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ (108) وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ									
वह गुमराह	उस पर	और	मैं	तुम पर	मुख्तार	108	और	जो	वहि
हुआ	(बुरे को)	नहीं					पैरवी	होती है	
							करो		
إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ (109)									
तुम्हारी	और सबर	यहां तक	फ़ैसला	अल्लाह	और	बेहतरीन	फ़ैसला	109	
तरफ़	करो	कि	कर दे	वह	वह	करने	वाला		
آيَاتِهَا ۚ (11) سُورَةُ هُودٍ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۱۰									
123 آيَاتِهَا ۚ (11) سُورَةُ هُودٍ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۱۰									
123 آيَاتِهَا ۚ (11) سُورَةُ هُودٍ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ۱۰									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ									
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है									
الرَّحْمَنُ كَتَبَ أَحْكَمَتْ آيَتُهُ ثُمَّ فَصَّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ (1)									
अलिफ़	यह	मज़बूत	इस की	फिर	तफ़सील	से	पास	हिक्मत	ख़बरदार
लाम	किताब	की गई	आयात		की गई			वाले	1
رَبِّكَ تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ (2) وَإِنْ اسْتَغْفَرُوا									
यह	इबादत	अल्लाह	वेशक	तुम्हारे	उस	डराने	और	और	मग़फ़िरत
कि न	करो	के सिवा	मैं	लिए	से	वाला	देने वाला	यह कि	तलब करो
رَبِّكُمْ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى									
अपना	फिर	उस की तरफ़	वह फ़ाइदा	मताअ	अच्छी	तक	वक़्त	मुक़र्रर	
रब		रुज़ूअ करो	पहुँचाएगा तुम्हें						
وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ									
और देगा	हर	फज़ल	अपना	और	फिर	तो	डरता	तुम पर	अज़ाब
		वाला	फज़ल	अगर तुम	जाओ	वेशक मैं	हूँ		
يَوْمٍ كَبِيرٍ (3) إِلَىٰ اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (4) إِلَّا									
एक	बड़ा	3	अल्लाह की	लौटना है	और	पर	हर शै	कुदरत	याद
दिन			तरफ़	तुम्हें	वह			वाला	रखो
إِنَّهُمْ يَشْتُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ إِلَّا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ									
वेशक	दोहरे	अपने सीने	ताकि	उस	याद	जब	पहनते हैं	अपने कपड़े	
वह	करते हैं		छुपालें	से	रखो				
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (5)									
वह	जो वह	और जो वह	वेशक	जानने	दिलों के भेद	5			
जानता है	छुपाते हैं	ज़ाहिर करते हैं	वह	वाला					